स्वर्ग यही

श्रीमती आशा शर्मा
C/o डॉ० संजय कुमार शर्मा,
राजसं. क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहटी

अपनी नाभि की कस्तूरी की महक से,
उन्मादित मृग ढूँढता उसे वन–वन दूर स्थान।
वह तो चलो पशु है नादान,
पर मनुष्य तो इतना नादान नहीं,
अपने भीतर के भगवान को ढूँढता–फिरता
मंदिर–मस्जिद बन अनजान।

वह किस स्वर्ग की आस में,
कभी पहाड़ों की ऊँचाई नापता,
कभी नदियों में डुबकियाँ लगाता ?
अरे मूर्ख स्वर्ग तो तेरी धरती है,
जिसे तू नरक बनाने पर तुला है !
खड़ी कर रहा है ऊँची–ऊँची इमारतें, नष्ट कर वन–उपवन।
अपने आसरे को बनाने में छीन रहा वन जीवों का निकेतन।

जिस निर्मल जलधारा से वह पाता है अपना जीवन,
उसी में अनर्गल बहा दूषित कर रहा पल–पल।
कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं दूषित वातावरण।
कौन है इनके जिम्मेदार ?
तू न बन कालिदास, जिस डाल पर बैठा है, उसे न काट !
मन की आँखें खोल, पाएगा स्वर्ग यहीं
पाएगा स्वर्ग यहीं !

विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा की हिमायत करने वाले जनता के दुश्मन हैं।

महात्मा गाँधी